विषय-सूची

अध्याय पृष्ठ

1. आर्थिक भूगोल का अर्थ, विषयक्षेत्र एवं क्रमिक विकास 1-8
(Meaning, Scope and Systematic Development of Economic Geography)
आर्थिक भूगोल का अर्थ, आर्थिक भूगोल की कुछ प्रमुख परिभाषाएं, आर्थिक क्रियाओं के वर्ग, आर्थिक क्रियाओं का क्षेत्रीय स्वरूप, आर्थिक भूगोल का विषयक्षेत्र, आर्थिक भूगोल का क्रमिक विकास – प्रारम्भिक काल, अन्तर्युद्ध काल, युद्धोत्तर काल, आधुनिक काल, आर्थिक भूगोल का प्रतिरूप, आर्थिक क्रियाकलापों का पर्यावरणीय पक्ष।

2. आर्थिक भूगोल की आधारभूत संकल्पनाएं, उपागम, अभिनव प्रवृत्तियां, अध्ययन विधियाँ एवं अन्य विषयों से सम्बन्ध 9-17
(Fundamental Concepts of Economic Geography, Approaches, Recent Trends, Method of Study and Relation with Other Subjects)
आर्थिक भूदृश्य की संकल्पना, आर्थिक भूदृश्य की गत्यात्मकता, वर्तमान भूदृश्य संसाधन संरचना, आर्थिक प्रक्रिया आर्थिक विकास की अवस्था का द्योतक है, आर्थिक क्रियाओं की अवस्थिति की संकल्पना, आर्थिक प्रदेश की संकल्पना, क्षेत्रीय कार्यात्मक अन्योन्यक्रिया की संकल्पना, भूदृश्यों के क्षेत्रीय कार्यात्मक संगठन की संकल्पना, प्रादेशिक आर्थिक विकास की संकल्पना, आर्थिक भूगोल के अध्ययन के उपागम– वस्तुगत उपागम, व्यावसायिक उपागम, क्रमबद्ध उपागम, प्रादेशिक उपागम, सैद्धान्तिक उपागम, संराधन उपयोग प्रक्रिया उपागम, तंत्र उपागम, आर्थिक भूगोल की अभिनव प्रवृत्तियां – प्रदेश की संकल्पना, मात्रात्मक क्रान्ति, मॉडल निर्माण, तन्त्र विश्लेषण, विशेषीकरण की प्रवृत्ति, अध्ययन विधियाँ – स्थिति एवं वितरण प्रतिरूप का अध्ययन, आर्थिक कार्य-कलाप की विशेषताओं का अध्ययन, आर्थिक तत्त्व, वस्तु एवं कार्यकलाप का अन्य घटनाओं से सम्बन्ध, आर्थिक भूगोल का अन्य विषयों से सम्बन्ध।

3. संसाधन और संसाधन संरक्षण (Resources and Resource Conservation) 18-31
संसाधन संरक्षण की अवधारणा, संसाधन और संस्कृति, संसाधन प्रक्रिया, मानव और प्राकृतिक वातावरण में गत्यात्मक सम्बन्ध, संसाधनों की उपयोगिता को प्रभावित करने वाले कारक, संसाधनों का वर्गीकरण– प्राकृतिक संसाधन, मानवीय संसाधन, प्राकृतिक संसाधनों का वर्गीकरण, संसाधन पर्याप्तता का सिद्धान्त, संसाधन संरक्षण, संसाधन संरक्षण क्यों ?, संसाधन संरक्षण का सिद्धान्त, संसाधन संरक्षण नियोजन, संसाधन संरक्षण के प्रकार, संसाधन संरक्षण : समस्या और समाधान, संसाधन और अर्थतन्त्र, अर्थतन्त्र, तकनीकी और संसाधन मूल्यांकन, संसाधन उपयोग और अर्थतन्त्र, संसाधन परिरक्षण।

4. मिट्टी संसाधन एवं संरक्षण (Soil Resources and Conservation) 32-43
मिट्टी का संसाधन के रूप में प्रयोग, मिट्टी की उत्पत्ति, मिट्टी की पार्श्विका, मिट्टी का वर्गीकरण, मिट्टियों का वितरण प्रारूप, मिट्टी की उत्पादन क्षमता, मिट्टी की उत्पादन क्षमता का ह्रास, मिट्टी क्षरण के कारक, मिट्टी क्षरण का परिणाम, अपक्षालन से प्रभावित मिट्टियों के सुधार की विधियाँ, मिट्टी संरक्षण की विधियाँ।

1

आर्थिक भूगोल का अर्थ, विषय क्षेत्र एवं क्रमिक विकास

(Meaning, Scope and Systematic Develompent of Ecomic Geography)

आर्थिक भूगोल का अर्थ

आर्थिक भूगोल प्रत्यक्षतः मानव भूगोल की एक शाखा है जिसके अन्तर्गत भूतल पर मानव की आर्थिक क्रियाओं की क्षेत्रीय विविधताओं, विशेषताओं, स्थानिक प्रतिरूपों तथा पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन किया जाता है। दूसरे शब्दों में आर्थिक भूगोल में आर्थिक कार्यों के वितरण के प्रतिरूपों, उनके कारकों तथा प्रक्रियाओं का अध्ययन होता है। समस्त पृथ्वी तल पर प्राकृतिक संसाधनों का क्यों, कहाँ तथा कैसे उपयोग होता है तथा उसकी परिणति किस प्रकार की है, इस बात का विश्लेषणात्मक अध्ययन ही आर्थिक भूगोल का मूल मंत्र कहा जा सकता है।

समस्त जीवों में मानव एक महत्वाकांक्षी एवं बुद्धिमान प्राणी है। उसकी आवश्यकतायें असीमित हैं, जिनकी पूर्ति हेतु वह सतत् प्रयत्नशील रहता है। वह अनेक प्रकार की वस्तुओं का उत्पादन, उपभोग एवं विनिमय करता है। आर्थिक भूगोल मानव की इन्हीं आर्थिक क्रियाओं– उत्पादन, उपभोग एवं विनिमय का अध्ययन है।

आर्थिक भूगोल का वर्तमान स्वरूप भूगोल के आधुनिक विकास का परिचायक है तथा इसका विषय क्षेत्र मानव के वर्तमान आर्थिक जीवन की व्यापकता व्यक्त करता है। जैसे-जैसे भूगोल की अन्य शाखाओं का विकास होता गया वैसे-वैसे आर्थिक भूगोल की परिभाषा बदलती रही है। आर्थिक भूगोल की कुछ प्रमुख परिभाषायें इस तथ्य को प्रकट करती हैं।

आर्थिक भूगोल की कुछ प्रमुख परिभाषायें

1. **प्रो. जी. चिशोल्म** के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत उन सभी भौगोलिक परिस्थितियों का अध्ययन होता है जो वस्तुओं के उत्पादन, परिवहन तथा विनिमय को प्रभावित करती हैं। इसके अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य किसी क्षेत्र की आगामी आर्थिक एवं व्यापारिक क्रियाओं पर पड़ने वाले भौगोलिक प्रभाव का अध्ययन है।"

(It embraces all geographical conditions affecting the production, transport and exchange of commodities. Its chief use is to enable us to form some reasonable estimate of future course of commercial development so for as that is governed by geographical conditions)

2. **प्रो. आर.एन. ब्राउन** के अनुसार, "आर्थिक भूगोल वह शाखा है, जिसके अन्तर्गत मानव की आर्थिक क्रियाओं पर पड़ने वाले प्राकृतिक वातावरण के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है।"

(Economic geography is that aspect of the subject which deals with the influence of the environment-inorganic and organic on the economic activities of man)

3. **प्रो. मैकफरलेन** के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत हम मनुष्य के आर्थिक प्रयत्नों पर, भौगोलिक तथा भौतिक परिस्थितियों, विशेष रूप से भौगोलिक संरचना, जलवायु तथा भूमि की धरातलीय विशेषताओं के प्रभाव का अध्ययन करते हैं।"

(Economic geography is the study of influence exerted on the economic activities of man by his physical environment and more specially by the form and the structure of the surface of land, the climatic conditions which prevail upon it, and the place relations in which its different regions stand to one another)

4. **प्रो. हंटिंगटन** के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत उन सभी प्रकार के पदार्थों, साधनों, क्रियाओं, रीति-रिवाजों, मानव शक्तियों तथा मानव योग्यताओं का विवरण आता है जो जीविकोपार्जन में सहायक होते हैं।"

(Economic Geography deals with the distribution of all sorts of material resources, activities and types of ability that play a part in the work of getting a living and all are the subject matter of Economic geography)

5. प्रो. शॉ के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत इस बात का अध्ययन किया जाता है कि किस प्रकार मानवीय आर्थिक क्रियाएं विश्व के उद्योगों, उसके आधारभूत साधनों और औद्योगिक उत्पादनों के अनुरूप होती हैं।"

(Economic geography is concerned with problems of making a living with industries with basic resources and industrial commodities)

6. प्रो. ग्रिगर के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत इस बात का अध्ययन किया जाता है कि विभिन्न स्थानों पर मानव अपनी प्राकृतिक परिस्थितियों की भिन्नता के साथ किस प्रकार सन्तुलन स्थापित करता है।"

(Economic geography is study of how man makes a living in adjustment of his environment and the difference in those adjustment from place to place)

7. मेयर एवं स्ट्रीटैलमीर के अनुसार, "आर्थिक भूगोल की रुचि इस बात के अध्ययन में है कि मानव जीविकोपार्जन के लिए कौन-सी आर्थिक क्रियायें कहाँ करता है तथा मानव भूमि के द्वारा आर्थिक-शोषण रो किस प्रकार प्रवास और रचना का प्रारूप बनाता है।"

(Economic geography is interested- (i) in the relationship between how men make their living and where they make them, and (ii) in the patterns of structure and movement that result from man's economic exploiation of the earth)

8. प्रो. पाउन्डस के अनुसार, "आर्थिक भूगोल भू-पृष्ठ पर मानव की उत्पादक क्रियाओं के वितरण का अध्ययन करता है। यह क्रियाएं प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक होती हैं।"

(Economic geography is concerned with the distribution of man's productive activities over the surface of the earth. These activities are primay, secondary and tertiary activities)

9. प्रो. बुकानन के अनुसार, "आर्थिक भूगोल में मानव के आर्थिक प्रयत्नों का उसके निवास स्थान के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है।"

(Economic geography is the study of man's economic activities in relation to earth as his home)

10. प्रो. क्लिन, स्ट्रैकी एवं हाल के अनुसार, "मानव की आर्थिक क्रियाओं के वितरण और प्राकृतिक परिस्थितियों के साथ उनके सम्बन्धों के अध्ययन को आर्थिक भूगोल कहा जाता है।"

(Economic geography may be defined as the study of the distribution of economic activities and their relation to the physical environments)

11. सी.एफ. जोन्स के अनुसार, "आर्थिक भूगोल उत्पादक व्यवसायों का अध्ययन करता है और यह व्याख्या करने की चेष्टा करता है कि कुछ प्रदेश क्यों विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन और निर्यात में अग्रणी हैं तथा क्यों कुछ अन्य प्रदेश इन्हीं वस्तुओं के आयात और उपयोग में प्रमुख हैं।"

(Economic geography deals with the productive occupations and attempts to explain why certain regions are outstanding in the production and exportation of various articles and why other are significant in the import and utilization of these things)

12. आर.ई. मरफी के अनुसार, "आर्थिक भूगोल मानव के जीविकोपार्जन की विधियों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर मिलने वाली समानताओं और विभिन्नताओं का अध्ययन करता है।"

(Economic geography has to deal with similarities and differences from place to place in the ways people make a living)

13. रूडोल्फ वैट्जन्स के अनुसार, "आर्थिक भूगोल में भू-क्षेत्रों की संसाधनता और मानव की परस्पर आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, जिसमें उस अन्योन्य क्रिया के उचित परिणामों के वितरण की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है।"

(Economic geography is a study of the interaction between (a) the earth space in its fulfilment and (b) economic man with particular attention to explanation the distribution of the partinent consequences of such interaction)

14. गोट्ज के अनुसार, "आर्थिक भूगोल विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की उन विशेषताओं का वैज्ञानिक विवेचन करता है, जिनका वस्तुओं के उत्पादन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।"

(Economic geography makes a scientific investigation of nature of world areas in their direct influence on the production of goods)

15. अलेक्जेन्डर के अनुसार, "आर्थिक भूगोल भूतल पर सम्पत्ति का उत्पादन, विनिमय और उपभोग से सम्बन्धित मानवीय कार्यकलाप की क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन है।"

5. प्रो. शॉ के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत इस बात का अध्ययन किया जाता है कि किस प्रकार मानवीय आर्थिक क्रियाएं विश्व के उद्योगों, उसके आधारभूत साधनों और औद्योगिक उत्पादनों के अनुरूप होती हैं।"

(Economic geography is concerned with problems of making a living with industries with basic resources and industrial commodities)

6. प्रो. ग्रिगर के अनुसार, "आर्थिक भूगोल के अन्तर्गत इस बात का अध्ययन किया जाता है कि विभिन्न स्थानों पर मानव अपनी प्राकृतिक परिस्थितियों की भिन्नता के साथ किस प्रकार सन्तुलन स्थापित करता है।"

(Economic geography is study of how man makes a living in adjustment of his environment and the difference in those adjustment from place to place)

7. मेयर एवं स्ट्रीटैलमीर के अनुसार, "आर्थिक भूगोल की रुचि इस बात के अध्ययन में है कि मानव जीविकोपार्जन के लिए कौन-सी आर्थिक क्रियायें कहाँ करता है तथा मानव भूमि के द्वारा आर्थिक-शोषण रो किस प्रकार प्रवास और रचना का प्रारूप बनाता है।"

(Economic geography is interested- (i) in the relationship between how men make their living and where they make them, and (ii) in the patterns of structure and movement that result from man's economic exploiation of the earth)

8. प्रो. पाउन्डस के अनुसार, "आर्थिक भूगोल भू-पृष्ठ पर मानव की उत्पादक क्रियाओं के वितरण का अध्ययन करता है। यह क्रियाएं प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीयक होती हैं।"

(Economic geography is concerned with the distribution of man's productive activities over the surface of the earth. These activities are primay, secondary and tertiary activities)

9. प्रो. बुकानन के अनुसार, "आर्थिक भूगोल में मानव के आर्थिक प्रयत्नों का उसके निवास स्थान के सम्बन्ध में अध्ययन किया जाता है।"

(Economic geography is the study of man's economic activities in relation to earth as his home)

10. प्रो. क्लिन, स्ट्रैकी एवं हाल के अनुसार, "मानव की आर्थिक क्रियाओं के वितरण और प्राकृतिक परिस्थितियों के साथ उनके सम्बन्धों के अध्ययन को आर्थिक भूगोल कहा जाता है।"

(Economic geography may be defined as the study of the distribution of economic activities and their relation to the physical environments)

11. सी.एफ. जोन्स के अनुसार, "आर्थिक भूगोल उत्पादक व्यवसायों का अध्ययन करता है और यह व्याख्या करने की चेष्टा करता है कि कुछ प्रदेश क्यों विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन और निर्यात में अग्रणी हैं तथा क्यों कुछ अन्य प्रदेश इन्हीं वस्तुओं के आयात और उपयोग में प्रमुख हैं।"

(Economic geography deals with the productive occupations and attempts to explain why certain regions are outstanding in the production and exportation of various articles and why other are significant in the import and utilization of these things)

12. आर.ई. मरफी के अनुसार, "आर्थिक भूगोल मानव के जीविकोपार्जन की विधियों में एक स्थान से दूसरे स्थान पर मिलने वाली समानताओं और विभिन्नताओं का अध्ययन करता है।"

(Economic geography has to deal with similarities and differences from place to place in the ways people make a living)

13. रूडोल्फ वैट्जन्स के अनुसार, "आर्थिक भूगोल में भू-क्षेत्रों की संसाधनता और मानव की परस्पर आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, जिसमें उस अन्योन्य क्रिया के उचित परिणामों के वितरण की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है।"

(Economic geography is a study of the interaction between (a) the earth space in its fulfilment and (b) economic man with particular attention to explanation the distribution of the partinent consequences of such interaction)

14. गोट्ज के अनुसार, "आर्थिक भूगोल विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की उन विशेषताओं का वैज्ञानिक विवेचन करता है, जिनका वस्तुओं के उत्पादन पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।"

(Economic geography makes a scientific investigation of nature of world areas in their direct influence on the production of goods)

15. अलेक्जेन्डर के अनुसार, "आर्थिक भूगोल भूतल पर सम्पत्ति का उत्पादन, विनिमय और उपभोग से सम्बन्धित मानवीय कार्यकलाप की क्षेत्रीय विभिन्नताओं का अध्ययन है।"

3

संसाधन और संसाधन संरक्षण
(Resources and Resource Conservation)

मानव की विभिन्न आवश्यकताओं की आंशिक या पूर्णरूप से पूर्ति करने वाले स्रोत को संसाधन कहते हैं। संसाधन एवं मानव में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। संसाधन के अस्तित्व पूर्ण रूप से मानव पर तथा मानव का अस्तित्व संसाधन पर निर्भर है। साधारणतया लोग मात्र किसी गोचर वस्तु या तत्व यथा जल, वन, मिट्टी, खनिज पदार्थ आदि को ही संसाधन समझते हैं लेकिन बहुत से अगोचर वस्तु या तत्व यथा—मानव की शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमता, रुचि, ज्ञान, राष्ट्रीय एवं सामाजिक संगठन, आर्थिक उन्नति, राजनैतिक स्थायित्व आदि स्वयं में संसाधन हैं, क्योंकि ये सभी उसकी कठिनाइयों के निवारण अथवा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति में आंशिक या पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। इसी तरह किसी एक या अनेक वस्तु, द्रव्य या तत्व जैसे— कोयला, लोहा, खनिज तेल आदि को ही संसाधन माना जाता है परन्तु उन कारकों एवं योजनाओं की ओर ध्यान नहीं दिया जाता जिसके फलस्वरूप इनका उत्पादन और उपभोग सम्भव होता है, जबकि उत्पादन एवं उपभोग करने वाले कारकों-पूँजी, बाजार, परिवहन के साधन, प्राविधिक ज्ञान आदि के सन्दर्भ में ही उनकी संसाधनता का रूप निर्धारित होता है। इस प्रकार संसाधन शब्द अत्यन्त व्यापक है। किसी वस्तु अथवा तत्व की संसाधनता स्थान एवं समय के परिप्रेक्ष में बदलती रहती है। अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि प्राकृतिक एवं मानवीय तत्वों के गत्यात्मक तथा अन्योन्य प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप ही संसाधनों का विकास होता है।

जिम्मरमैन ने संसाधन का अर्थ स्पष्ट करते हुए तीन तत्वों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है—1. वह जिस पर मनुष्य आश्रित या निर्भर हो, 2. वह जिससे मनुष्य की इच्छा की पूर्ति हो तथा 3. मानव की, अवसर का लाभ उठाने या कठिनाइयों का सामना करने की शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमता। वस्तुतः संसाधन के अन्तर्गत वस्तु एवं तत्व के अतिरिक्त अनेक अचल तत्व सम्मिलित हैं जिनमें मनुष्य का ज्ञान सबसे बड़ा संसाधन है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मानव ज्ञान ही प्राकृतिक वस्तुओं को संसाधन का रूप देता है अन्यथा उसका कोई मूल्य नहीं होता। इसलिए यह कहा जाता है कि "संसाधन होते नहीं, बल्कि बनते हैं।" उनके बनने में मानवीय सम्बद्धता की आवश्यकता होती है। बोमेन (Bowman) ने सही लिखा है कि वातावरण के भौगोलिक तत्व सीमित अर्थ में ही स्थैतिक हैं। ज्योंही मानवीय तत्वों से उनकी सम्बद्धता होती है वे तत्व मानवीय विशेषताओं की तरह ही गतिशील हो जाते हैं। यही कारण है कि विभिन्न काल में वस्तुओं का मूल्य बदलता है और संसाधन के रूप में उनका मूल्य घटना-बढ़ता रहता है। इसी कारण हर सभ्यता या संस्कृति या देश-काल की संसाधन-तालिकाएँ एक-दूसरे से भिन्न होती हैं और उनकी संसाधनता एवं विशेषताओं तथा उपभोग-सम्भावनाओं पर मानविक तत्वों का गहरा प्रभाव अंकित रहता है। परिस्थितियों के परिवर्तन में संसाधन तालिका भी बदल जाती है। एक ही स्थान में भी परिस्थितियाँ परिवर्तनशील रहती हैं, अतः उस स्थान की संसाधन-तालिका या विभिन्न संसाधनों का सापेक्षिक महत्व भी बदलता रहता है। उदाहरणस्वरूप युद्धकाल और शान्तिकाल अथवा योजनाकाल और साधारण समय में संसाधनों के महत्व में प्रचुर अन्तर आ जाता है।

संसाधन और संस्कृति — मानव संस्कृति, मानव के ज्ञान एवं प्राकृतिक वातावरण के अन्तर्सम्बन्धों का प्रतिफल होती है। संस्कृति के विकास के साथ-साथ पुराने सांस्कृतिक तत्त्वों का महत्त्व बढ़ता जाता है। मानव जैसे-जैसे प्राकृतिक वातावरण से सामंजस्य प्राप्त करता है, वैसे-वैसे वह प्राकृतिक तत्वों से अधिक परिचित होता जाता है और ऐसी अवस्था आने लगती है कि जब उन प्राकृतिक तत्वों के प्रतिरूप भी बदलने लगते हैं। कई दशाओं में तो इन प्राकृतिक तत्वों का मानव द्वारा विनाश भी होना प्रारम्भ हो जाता है। कार्ल-सॉवर के अनुसार मानव द्वारा प्राकृतिक वातावरण की विकृति सिद्धान्त आवश्यक है। मानवीय भू-दृश्य वस्तुतः मानव की उस परिवर्तनकारी एवं विकृतिकारी प्राविधिक क्षमता का प्रतिफल है जिसके द्वारा प्राकृतिक वातावरण को वह अब तक विद्यमान

3

संसाधन और संसाधन संरक्षण
(Resources and Resource Conservation)

मानव की विभिन्न आवश्यकताओं की आंशिक या पूर्णरूप से पूर्ति करने वाले स्रोत को संसाधन कहते हैं। संसाधन एवं मानव में अन्योन्याश्रित सम्बन्ध है। संसाधन के अस्तित्व पूर्ण रूप से मानव पर तथा मानव का अस्तित्व संसाधन पर निर्भर है। साधारणतया लोग मात्र किसी गोचर वस्तु या तत्व यथा जल, वन, मिट्टी, खनिज पदार्थ आदि को ही संसाधन समझते हैं लेकिन बहुत से अगोचर वस्तु या तत्व यथा—मानव की शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमता, रुचि, ज्ञान, राष्ट्रीय एवं सामाजिक संगठन, आर्थिक उन्नति, राजनैतिक स्थायित्व आदि स्वयं में संसाधन हैं, क्योंकि ये सभी उसकी कठिनाइयों के निवारण अथवा उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति में आंशिक या पूर्ण सहयोग प्रदान करते हैं। इसी तरह किसी एक या अनेक वस्तु, द्रव्य या तत्व जैसे— कोयला, लोहा, खनिज तेल आदि को ही संसाधन माना जाता है परन्तु उन कारकों एवं योजनाओं की ओर ध्यान नहीं दिया जाता जिसके फलस्वरूप इनका उत्पादन और उपभोग सम्भव होता है, जबकि उत्पादन एवं उपभोग करने वाले कारकों-पूँजी, बाजार, परिवहन के साधन, प्राविधिक ज्ञान आदि के सन्दर्भ में ही उनकी संसाधनता का रूप निर्धारित होता है। इस प्रकार संसाधन शब्द अत्यन्त व्यापक है। किसी वस्तु अथवा तत्व की संसाधनता स्थान एवं समय के परिप्रेक्ष में बदलती रहती है। अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि प्राकृतिक एवं मानवीय तत्वों के गत्यात्मक तथा अन्योन्य प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप ही संसाधनों का विकास होता है।

जिम्मरमैन ने संसाधन का अर्थ स्पष्ट करते हुए तीन तत्वों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है—1. वह जिस पर मनुष्य आश्रित या निर्भर हो, 2. वह जिससे मनुष्य की इच्छा की पूर्ति हो तथा 3. मानव की, अवसर का लाभ उठाने या कठिनाइयों का सामना करने की शारीरिक एवं बौद्धिक क्षमता। वस्तुतः संसाधन के अन्तर्गत वस्तु एवं तत्व के अतिरिक्त अनेक अचल तत्व सम्मिलित हैं जिनमें मनुष्य का ज्ञान सबसे बड़ा संसाधन है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि मानव ज्ञान ही प्राकृतिक वस्तुओं को संसाधन का रूप देता है अन्यथा उसका कोई मूल्य नहीं होता। इसलिए यह कहा जाता है कि "संसाधन होते नहीं, बल्कि बनते हैं।" उनके बनने में मानवीय सम्बद्धता की आवश्यकता होती है। बोमेन (Bowman) ने सही लिखा है कि वातावरण के भौगोलिक तत्व सीमित अर्थ में ही स्थैतिक हैं। ज्योंही मानवीय तत्वों से उनकी सम्बद्धता होती है वे तत्व मानवीय विशेषताओं की तरह ही गतिशील हो जाते हैं। यही कारण है कि विभिन्न काल में वस्तुओं का मूल्य बदलता है और संसाधन के रूप में उनका मूल्य घटना-बढ़ता रहता है। इसी कारण हर सभ्यता या संस्कृति या देश-काल की संसाधन-तालिकाएँ एक-दूसरे से भिन्न होती हैं और उनकी संसाधनता एवं विशेषताओं तथा उपभोग-सम्भावनाओं पर मानविक तत्वों का गहरा प्रभाव अंकित रहता है। परिस्थितियों के परिवर्तन में संसाधन तालिका भी बदल जाती है। एक ही स्थान में भी परिस्थितियाँ परिवर्तनशील रहती हैं, अतः उस स्थान की संसाधन-तालिका या विभिन्न संसाधनों का सापेक्षिक महत्व भी बदलता रहता है। उदाहरणस्वरूप युद्धकाल और शान्तिकाल अथवा योजनाकाल और साधारण समय में संसाधनों के महत्व में प्रचुर अन्तर आ जाता है।

संसाधन और संस्कृति — मानव संस्कृति, मानव के ज्ञान एवं प्राकृतिक वातावरण के अन्तर्सम्बन्धों का प्रतिफल होती है। संस्कृति के विकास के साथ-साथ पुराने सांस्कृतिक तत्त्वों का महत्त्व बढ़ता जाता है। मानव जैसे-जैसे प्राकृतिक वातावरण से सामंजस्य प्राप्त करता है, वैसे-वैसे वह प्राकृतिक तत्वों से अधिक परिचित होता जाता है और ऐसी अवस्था आने लगती है कि जब उन प्राकृतिक तत्वों के प्रतिरूप भी बदलने लगते हैं। कई दशाओं में तो इन प्राकृतिक तत्वों का मानव द्वारा विनाश भी होना प्रारम्भ हो जाता है। कार्ल-सॉवर के अनुसार मानव द्वारा प्राकृतिक वातावरण की विकृति सिद्धान्त आवश्यक है। मानवीय भू-दृश्य वस्तुतः मानव की उस परिवर्तनकारी एवं विकृतिकारी प्राविधिक क्षमता का प्रतिफल है जिसके द्वारा प्राकृतिक वातावरण को वह अब तक विद्यमान

4

मिट्टी संसाधन एवं संरक्षण

(Soil Resource and Conservation)

मानव विकास के लिए भौतिक पर्यावरण के तत्वों के अन्तर्गत मिट्टी महत्वपूर्ण संसाधन है। मनुष्य का भोजन किसी-न-किसी प्रकार मिट्टी से सम्बन्धित है। मानवीय सभ्यता पूर्णरूपेण मिट्टी से उत्पन्न हुई है उसी में पली-बढ़ी तथा अन्त में उसी में समाप्त हो जाती है। कृषि एवं वनस्पति की उत्पत्ति का मूल आधार मिट्टी ही है। मिट्टी मानव की आधारशिला है। **हंटिंगटन** (Huntington) ने मिट्टी को प्राकृतिक वातावरण का प्रधान तत्व माना है। **विलकॉक्स** (Wilcox) ने कहा है कि "मानव सभ्यता का इतिहास मिट्टी का इतिहास है और प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा मिट्टी से ही प्रारम्भ होती है।" **वाडिया** (Wadia) के अनुसार "मानव उपयोग की दृष्टि से सभी देशों की मिट्टियां वहाँ के आवरण प्रस्तर (regolith) का सबसे मूल्यवान अंग है और उनकी सबसे बड़ी प्राकृतिक सम्पत्ति है।" **कोल** (Cole) के अनुसार- "मिट्टी पृथ्वी की मृतक धूल को जीवन के सातत्व से जोड़ती हैं", **ह्वाइट एवं रेनर** (White & Renner) के अनुसार "पृथ्वी तल पर यदि मिट्टी न होती तो यहाँ जीवन कदापि सम्भव न था।" वस्तुतः मनुष्यों और राष्ट्रों का जीवन माप-दंड मिट्टी के समंजन पर ही आधारित है।

विश्व की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। कृषि का मिट्टी पर निर्भर रहने के कारण मिट्टी का अध्ययन हमारे लिए बहुत आवश्यक है। दुर्भाग्यवश विश्व की मिट्टियों के अध्ययन के लिए सन्तोषजनक काम बहुत ही कम हुआ है, इसलिए मिट्टी संसाधन की जो भी सामग्री प्राप्त है वह बहुत ही कम है।

मिट्टी का संसाधन के रूप में प्रयोग

मिट्टी से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध आज से नहीं, बल्कि अनादिकाल से रहा है। मानवीय सभ्यता मिट्टी से ही प्रारम्भ तथा विकसित हुई है। मानव एवं मिट्टी का समायोजन इस प्रकार है–

1. मिट्टी तथा मानव सभ्यता – हर देश या भू-भाग के अधिकार क्षेत्र में जो भूमि होती है, उसका प्रत्यक्ष प्रभाव वहाँ की सभ्यता पर पड़ता है। शुष्क एवं रेगिस्तानी क्षेत्रों के मनुष्यों का जीवन विषम या शीतोष्ण प्रदेश से पृथक रहता है। भारत के काली मिट्टी में कपास तथा थार की मरुभूमि में कंटीली झाड़ियों की उत्पत्ति स्पष्ट करती है कि सभ्यता की दौड़ में कौन आगे हो सकता है ? विश्व की जो भी प्राचीन ध्वस्त सभ्यतायें हैं वह नदियों के घाटी की देन हैं।

2. मिट्टी एवं उत्पादन – जिन क्षेत्रों में जिस प्रकार की मिट्टी है वहाँ वैसी ही उपज पैदा होती है। मिट्टी की रासायनिक संरचना पर पैदावार निर्भर करती है। कांप मिट्टी जिसमें चीका की मात्रा अधिक होती है। वहाँ चावल सबसे अधिक पैदा होता है तथा कांप मिट्टी में जहाँ रेत की मात्रा अधिक होती है तो वहाँ गेहूँ एवं चना की फसल उपयुक्त होती है। काली मिट्टी कपास के लिए उपयुक्त है तथा कछारी मिट्टी खाद्यान्न फसलों के लिए उपयुक्त होती है।

3. मिट्टी तथा गृहों का स्वरूप – मिट्टी का प्रभाव मानव गृहों पर भी आँका गया है। मिट्टी यदि सख्त होती है। तो सुगमता पर उससे पक्की ईंटें या दीवारें बन सकती हैं। यदि मिट्टी में बालू या रेत के कणों की अधिकता हुई तो उससे दीवार यदि बनायी भी जाये तो शुष्क होने पर गिरने का भय रहता है। कहीं-कहीं पर मिट्टी से लोग दीवारों की पोताई करते हैं तथा उन पर मिट्टी से डिजाइन भी बनाते हैं।

4. मिट्टी और वनस्पति – मिट्टी का प्रत्यक्ष प्रभाव वनस्पति की उत्पत्ति तथा वितरण पर पड़ता है। मिट्टी वनस्पति का भोजन है और वनस्पति से ही मिट्टी की रचना होती है। वनस्पति का प्रथम अंकुर मिट्टी में ही जमता है तथा मिट्टी से ही वह जड़ों के द्वारा नमी तथा भोजन की खोज करता है तथा जब पतझड़ होता है तो वनस्पति के सड़े-गले पदार्थों से ही मिट्टी की रचना होती है। इस प्रकार मिट्टी एवं वनस्पति का चक्र पूरा होता है।

5. मिट्टी तथा सामाजिक जीवन – प्रत्येक सामाजिक जीवन पर मिट्टी का प्रत्यक्ष प्रभाव लक्षित होता है। मानव के व्यवसाय यथा– कृषि, उद्योग आदि मुख्यतः मिट्टी से अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित होते हैं। इसीलिए कहा गया है कि मिट्टी पर समाज पूरी तरह से आधारित है।

6. मिट्टी तथा उद्योग – मिट्टी पर कई उद्योग-धन्धे आधारित हैं तथा मिट्टी के बर्तन बनाने के उद्योग के प्रमाण विश्व

4

मिट्टी संसाधन एवं संरक्षण

(Soil Resource and Conservation)

मानव विकास के लिए भौतिक पर्यावरण के तत्वों के अन्तर्गत मिट्टी महत्वपूर्ण संसाधन है। मनुष्य का भोजन किसी-न-किसी प्रकार मिट्टी से सम्बन्धित है। मानवीय सभ्यता पूर्णरूपेण मिट्टी से उत्पन्न हुई है उसी में पली-बढ़ी तथा अन्त में उसी में समाप्त हो जाती है। कृषि एवं वनस्पति की उत्पत्ति का मूल आधार मिट्टी ही है। मिट्टी मानव की आधारशिला है। **हंटिंगटन** (Huntington) ने मिट्टी को प्राकृतिक वातावरण का प्रधान तत्व माना है। **विलकॉक्स** (Wilcox) ने कहा है कि "मानव सभ्यता का इतिहास मिट्टी का इतिहास है और प्रत्येक व्यक्ति की शिक्षा मिट्टी से ही प्रारम्भ होती है।" **वाडिया** (Wadia) के अनुसार "मानव उपयोग की दृष्टि से सभी देशों की मिट्टियां वहाँ के आवरण प्रस्तर (regolith) का सबसे मूल्यवान अंग है और उनकी सबसे बड़ी प्राकृतिक सम्पत्ति है।" **कोल** (Cole) के अनुसार- "मिट्टी पृथ्वी की मृतक धूल को जीवन के सातत्व से जोड़ती हैं", **ह्वाइट एवं रेनर** (White & Renner) के अनुसार "पृथ्वी तल पर यदि मिट्टी न होती तो यहाँ जीवन कदापि सम्भव न था।" वस्तुतः मनुष्यों और राष्ट्रों का जीवन माप-दंड मिट्टी के समंजन पर ही आधारित है।

विश्व की अधिकांश जनसंख्या कृषि पर निर्भर है। कृषि का मिट्टी पर निर्भर रहने के कारण मिट्टी का अध्ययन हमारे लिए बहुत आवश्यक है। दुर्भाग्यवश विश्व की मिट्टियों के अध्ययन के लिए सन्तोषजनक काम बहुत ही कम हुआ है, इसलिए मिट्टी संसाधन की जो भी सामग्री प्राप्त है वह बहुत ही कम है।

मिट्टी का संसाधन के रूप में प्रयोग

मिट्टी से मानव का घनिष्ठ सम्बन्ध आज से नहीं, बल्कि अनादिकाल से रहा है। मानवीय सभ्यता मिट्टी से ही प्रारम्भ तथा विकसित हुई है। मानव एवं मिट्टी का समायोजन इस प्रकार है–

1. मिट्टी तथा मानव सभ्यता – हर देश या भू-भाग के अधिकार क्षेत्र में जो भूमि होती है, उसका प्रत्यक्ष प्रभाव वहाँ की सभ्यता पर पड़ता है। शुष्क एवं रेगिस्तानी क्षेत्रों के मनुष्यों का जीवन विषम या शीतोष्ण प्रदेश से पृथक रहता है। भारत के काली मिट्टी में कपास तथा थार की मरुभूमि में कंटीली झाड़ियों की उत्पत्ति स्पष्ट करती है कि सभ्यता की दौड़ में कौन आगे हो सकता है ? विश्व की जो भी प्राचीन ध्वस्त सभ्यतायें हैं वह नदियों के घाटी की देन हैं।

2. मिट्टी एवं उत्पादन – जिन क्षेत्रों में जिस प्रकार की मिट्टी है वहाँ वैसी ही उपज पैदा होती है। मिट्टी की रासायनिक संरचना पर पैदावार निर्भर करती है। कांप मिट्टी जिसमें चीका की मात्रा अधिक होती है। वहाँ चावल सबसे अधिक पैदा होता है तथा कांप मिट्टी में जहाँ रेत की मात्रा अधिक होती है तो वहाँ गेहूँ एवं चना की फसल उपयुक्त होती है। काली मिट्टी कपास के लिए उपयुक्त है तथा कछारी मिट्टी खाद्यान्न फसलों के लिए उपयुक्त होती है।

3. मिट्टी तथा गृहों का स्वरूप – मिट्टी का प्रभाव मानव गृहों पर भी आँका गया है। मिट्टी यदि सख्त होती है। तो सुगमता पर उससे पक्की ईंटें या दीवारें बन सकती हैं। यदि मिट्टी में बालू या रेत के कणों की अधिकता हुई तो उससे दीवार यदि बनायी भी जाये तो शुष्क होने पर गिरने का भय रहता है। कहीं-कहीं पर मिट्टी से लोग दीवारों की पोताई करते हैं तथा उन पर मिट्टी से डिजाइन भी बनाते हैं।

4. मिट्टी और वनस्पति – मिट्टी का प्रत्यक्ष प्रभाव वनस्पति की उत्पत्ति तथा वितरण पर पड़ता है। मिट्टी वनस्पति का भोजन है और वनस्पति से ही मिट्टी की रचना होती है। वनस्पति का प्रथम अंकुर मिट्टी में ही जमता है तथा मिट्टी से ही वह जड़ों के द्वारा नमी तथा भोजन की खोज करता है तथा जब पतझड़ होता है तो वनस्पति के सड़े-गले पदार्थों से ही मिट्टी की रचना होती है। इस प्रकार मिट्टी एवं वनस्पति का चक्र पूरा होता है।

5. मिट्टी तथा सामाजिक जीवन – प्रत्येक सामाजिक जीवन पर मिट्टी का प्रत्यक्ष प्रभाव लक्षित होता है। मानव के व्यवसाय यथा– कृषि, उद्योग आदि मुख्यतः मिट्टी से अप्रत्यक्ष रूप में प्रभावित होते हैं। इसीलिए कहा गया है कि मिट्टी पर समाज पूरी तरह से आधारित है।

6. मिट्टी तथा उद्योग – मिट्टी पर कई उद्योग-धन्धे आधारित हैं तथा मिट्टी के बर्तन बनाने के उद्योग के प्रमाण विश्व